International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 77-80

वर्तमान में ग्रामीण युवाओं को निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में)

श्रीमती रामेश्वरी प्रकाशनी[1], डॉ० अब्दुल सत्तार[2]

[1] सहायक प्राध्यापिका, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शिक्षा महाविद्यालयं, विभागाध्यक्ष कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] सहशोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान का एक विशाल सागर है। जिससे मनुष्य की सम्पूर्ण शक्तियों का विकास संभव है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। बालक सर्वप्रथम शिक्षा अपने माता–पिता से प्राप्त करता है, इसके बाद वह विद्यालय में प्रवेश करता है। शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें नवीन से नवीनतम अनुभव संयुक्त है।

शिक्षक ऐसे अनेक परिस्थितिया उत्पन्न करता है। जिसमें छात्रों के नये अनुभव होते है। तथा उन्हें कुछ करके सीखने का अनुभव होता है। शिक्षा शब्द को भी प्रयोग करते है। और उसमें हस्तक्षेप करते है। इस प्रकार शिक्षा को ही दो वर्गो में विभाजित करते है। प्रथम जनसाधारण की दृष्टि से शिक्षा का अर्थ तथा द्वितीय शिक्षा विशेषताओं द्वारा शिक्षा का अर्थ विशिष्ट है, अतः शिक्षा का अर्थ वर्तमान में विस्तृत हो गया है।

भूमिका

शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा के लिए विद्या तथा ज्ञान शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

"विद्या नाम नरस्य रूपथिक प्रच्छन गुप्तं धनम्
विद्या भोगकारी पशुयशः सुखकारी विद्या गुरूंण गुरूः"

अर्थात् विद्या मनुष्य का सुंदर रूप है, विद्या अत्यन्त गुप्त धन है, विद्या सुखभोग देने वाली है।

शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है। जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा के द्वारा प्राप्त प्रकाश से हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाईयों का निवारण होता हैं। और जीवन के वास्तविक महत्व को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है। शिक्षा मनुष्य के नैसर्गिक जीवन को पूर्णतः प्रदान करती है।

शिक्षा सभी प्रकार के अनुभवों का कुल योग है। जिसे मनुष्य अपने जीवन काल में प्राप्त करता है। उसका निर्माण करता है। जो मनुष्य की अंतदृष्टि को खोल सके। अतः शिक्षा से जुड़े सभी बिन्दुओं में परिवर्तन अपेक्षित है। जिसे निम्न रेखाचित्र से समझा जा सकता है। शिक्षा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा अंकित है।

महात्मा गाँधी जी के अनुसार

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से हैं, जो बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के रूपों का सर्वांगिण विकास करें।"

मानव समाज के आरंभ से लेकर अब तक के विकास पर दृष्टपात करे तो हम पायेंगे की व्यक्ति का जीवन इनता जटिल कभी नहीं रहा जितना कि आज है। जन्म के बाद व्यक्ति ज्यों–ज्यों अमाज के सम्पर्क में आता है। वह आपने आपको अनेक समस्याओं से घिरा हुआ पाता है। घर में विद्यालय में समाज में और अपने रोजाना के कार्यो में प्रायः उसे निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता की कमी का अनुभव करता है। अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थीयों एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समय समय पर निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है।

निर्देशन का आशय

निर्देशन का अर्थ है निर्देश देना, यह आदेश से भिन्न है। आदेश में अधिकार होता है और निर्देशन में सलाह। अतः निर्देशन के विषय में कहा जा सकता है यह किसी बालक या व्यक्ति को दी जाने वाली सलाह या सहायता होता है, यह सलाह नैतिक आध्यात्मिक तथा व्यवावायिक क्षेत्र में बड़ों द्वारा छोटे को दी जाती है। निर्देशन व्यक्ति को बुद्विमतापर्ण चयन एवं समायोजन के लिए दी गयी एक प्रकार की सहायता है।

निर्देशन का लक्ष्य लोगों की उद्देश्यपूर्ण बनाने में न कि केवल उद्देश्य पूर्ण क्रिया में सहायता देना है।

दूसरे शब्दो में व्यक्ति को ऐसा निर्देशन दिया जाय कि वह अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्यों को भली–भांति समझ सके और फिर उन लक्ष्यों को और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करे।

निर्देशन के अंतर्गत वे सभी क्रियाऐं आ जाती है, जो व्यक्ति की आत्मा–सिद्वि में सहायक होती है। निर्देशन समस्या समाधान हेतु चयन एवं समायोजन निर्धारण हेतु एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को दी जाती है। निर्देशन का लक्ष्य ग्रहणकर्ता में अपनी स्वतंत्रता तथा अपने प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है। यह एक सर्वभामिक सेवा है। जो कि केवल शिक्षालय या परिवार तक सीमित नहीं है। यह जीवन के सभी पक्षों घरो,व्यापार,उद्योग, शासन,सामाजिक जीवन चिकित्सालय कारागार में व्याप्त है। वास्तव में इसका अस्तित्व उन सभी स्थानों में है। जहाँ व्यक्ति है। जो कि सहायता चाहते है। और जहाँ व्यक्ति है। जो कि सहायता दे सकते है। अतः हम कह सकते है।

परामर्श से आशय

परामर्श शब्द दो व्यक्तियों के सम्पर्क की उन सभी स्थितियों का समावेश करता है। जिसमें एक व्यक्ति को अपने एवं पर्यावरण के बीच प्रभावी समायोजन प्राप्त करने में सहायता की जाती है। परामर्श में दो तत्व महत्वपूर्ण है। मानवीय संबंध एवं सहायता ।

परामर्श के लक्ष्यों का स्थान पर कई बार साधनों को अधिक महत्व दे दिया जाता है। किन्तु तकनीकी या साधन को ही लक्ष्य मान बैढ़ना भूल है। साहस और साधन दोनो ही समान महत्व रखते है। साहस कार्य के प्रारंभ की ओर प्ररित करता है। जबकि साधन दोनो ही समान महत्व रखते है। परामर्श के लक्ष्यों का निर्धारण की तीसरी मुख्य बात यह हैं । कि व्यक्ति के सर्वागीण विकास में उसे

सहायता करनी चाहिए उसे अपनी दृष्टि परिधि में समस्त व्यक्तित्व को ग्रहण करना चाहिए।
परामर्श के प्रक्रम में परामर्श दाता को बीच–बीच में अनेक अनुभवों से गुजरना होता है, ये अनुभव सार्थक हो सकता है एवं इनको उपयोगी बनाया जा सकता है। इसके लिए परामर्श के पूर्व उसके लिए अपेक्षित तैयारी कर ली जानी चाहिए । परामर्शदाता की उपबोध्य की समस्या से संबंधित अथवा उपबोध्य के विषय में आवश्यक आकड़े एवं पूर्व जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए। जहाँ उपबोध्य एवं परामर्शदाता मिल रहें हो वहाँ किसी प्रकार का शोर या बाहरी हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

परामर्श की प्रकिया के तीन पमुख अंग है

लक्ष्य एवं प्रयोजना, उपबोध्य तथा परामर्शदाता। परामर्श मनोवैज्ञानिक को न परामर्श और मनोचिकित्सा को एकार्थवाची माना है। और इसी को ध्यान में रखकर परामर्श के लक्ष्यों का निर्धारण किया है।

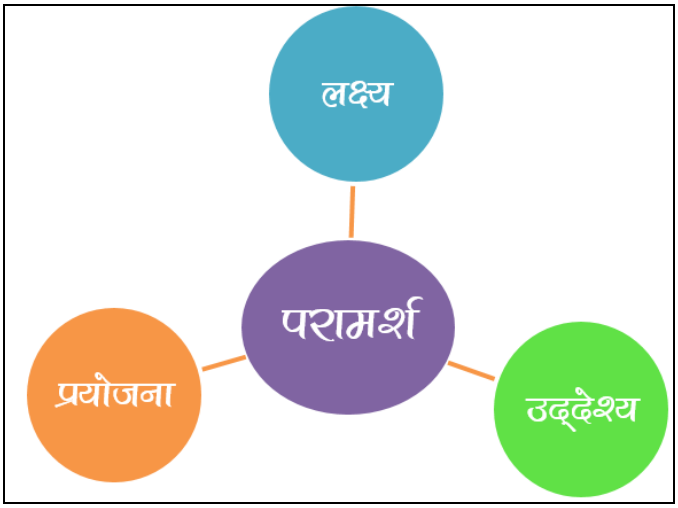

परामर्श का लक्ष्य विद्यार्थी को अधिक प्रौढ़ बनाने स्वयं क्रियाशील होने ताकि अपने उचित मूल्यांकन में समर्थ हो सकने में सहायता देने से संबंधित है। परामर्श में विखरों का आदान–प्रदान एवं महत्व पूर्ण तत्व है। परामर्श में इसकी योग्यता होनी चाहिए कि उपबोध्य के मनोभावों की पूर्णरूपेण समझ सके।
बिना निर्देशन का परामर्श और बिना परामर्श का निर्देशन मनुष्य के किसी काम का नहीं होता निर्देशन एवं परामर्श एक सिकके के दो पहलू है। परामर्श के बिना निर्देशन व्यर्थ और निर्देशन के बिना परामर्श निप्रमाण है। निर्देशन के जीवन में स्वतंत्र कोई स्थान नहीं है। यह तो मात्र एक प्रक्रम है।जिसका उद्देश्य सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए व्यक्तियों के वांछित विकास में सहायता पहुँचाना है। यह प्रक्रिया निरंन्तर गतिशील रहती है। निर्देशन में व्यक्ति को इस प्रकार सहायता पहुँचाना है। व्यक्ति स्वयं को समझे उसकी क्षमताओं रूचियों तथा अन्य योग्यताओं का अधिकतम संभवित उपयोग उसके विकास में हो सके। अपने समय के परिवेश में आने वाली विभिन्न परिस्थितियाँ में यह अपना समायोजन कर सकें यही निर्देशन का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आधार भी है।
यह व्यक्ति को मानव व्यवहार और सामाजिक दायित्मव को बोध करता है। निर्देशन के माध्यम से व्यक्ति को अपनी योग्यताओं, अभिरूचियों मानसिक प्रवृत्तियों को समझने में व कार्य क्षेत्र एवं शैक्षिक प्रयासों के विषय प्रयासों के विषय में अधिक सीख सकते है। निर्देशन के माध्यम से व्यक्ति को अपने निर्णय लेने में सहायता मिलती है। अतः आत्म निर्देशन बनने में सहायता करता है।
शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्देशन के स्वरूप का निर्धारण इस स्तर पर छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप निश्चित होता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के शारीरिक विकास एवं विद्यालय के जीवन में समायोजन को ध्यान में रखकर शिक्षक एवं विशेषज्ञों की सेवाओं में पर्याप्त तालमेल होना चाहिए माध्यमिक स्तर पर विषय का चयन के लिए पाठ्यक्रमोत्तर क्रियाकलापों एवं भावी योजना की दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता होती है।

संबंधित शोध अध्ययन

अनुसंधान कार्य करने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन से यह ज्ञात होता है। कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चूका है।किस विधि से कार्य किया गया है। कि इसके आधार पर ही समस्या का निर्धारण तथा इसकी क्रूा रूपरेखा तैयार की जाती है।
संबंधित शोध अध्ययन से आशय है कि समस्त पत्र पत्रिकाओं के समाधान परिकल्पना ओं के निर्माण समस्या से संबंधित आकड़ों के संकलन एवं अध्ययन की सुविधा प्राप्त होती है।
गुड तथा स्केट के अनुसार :– विज्ञान का अर्थ बुद्वि का विकास करना हैं । तथा अनुसंधान का कार्य विज्ञान का विकास करना है। अतः इस बुद्धिमता का विकास करना चाहते है। तो अनुसंधान करना ही होगा
किसी समस्या चयन के पश्चात् वैज्ञानिक अध्ययन में यह आवश्यक हो जाता है। कि समस्या से संबंधित तथ्यों पूर्व में जो संबंधित शोध कार्य किये गये है। उनके निष्कर्षो का अध्ययन अपने शोध के विषय में समस्या समाधान के लिए किया जाये। इसके पूर्व किये गये विभिन्न मनोवैाानिक तथा शिक्षा शास्त्रियों द्वारा शोधकार्य का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।
अनुसंधान कार्य के लिए संबंधित शोध साहित्य के द्वारा ही सहीं दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त होता हैं अतः इसका अध्ययन करना अतिआवश्यक हैं तथा इससे यह भी जानकारी प्राप्त होती हैं कि संबंधन क्षेत्र में कितना शोध कार्य हो चुका है।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न उद्देश्य कार्य में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये

1. ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के व्यक्तित्व विकास में निर्देशन की भूमिका का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के सृजनात्मक के विकास में परामर्श की भूमिका का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में निर्देशन एवं परामर्श से आप्तनिर्भरता के गुणों का विकास होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न परिकल्पना निर्धारित किये गये।

परिकल्पना

अनुसंधान कार्य में समस्या चयन के पश्चात् एक उपयुक्त परिकल्पना की आवश्यकता होती है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ पूर्व चिंतन इसका अर्थ है । कि समस्या के विश्लेषण एवं परिभाषीकरण में पूर्व चिंतन कर लिया गया है। यह अनुसंधान पकिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है । परिकल्पना के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं है।
परिकल्पना एक संबंधित समस्या का संभाव तथा परीक्षण योग्य प्रस्ताव होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

परिकल्पना H_1

परिकल्पना निर्देशन एवं परामर्श से ग्रामीण युवाओं का व्यक्तित्व विकास होता है। इस संदर्भ में कुल 1000 उत्तरदाताओं का चयन देव निर्देशन के आधार पर किया गया ये सम्पूर्ण उत्तरदाता दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हायर सेकेन्डरी विद्यालयों में अध्ययन विद्यार्थी।

उत्तरदाताओं ने यह माना कि उन्हें निर्देशन एवं परामर्श का ज्ञान नहीं है। चूंकि ये सभी उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्रों से है।

परिकल्पना H_2

ग्रामीण युवाओं के आत्मनिर्भरता में परामर्श की भूमिका होती है इस संदर्भ में कुल 1000 उत्तरदाताओं का चयन देव निर्देशन के आधार पर किया गया ये सम्पूर्ण उतरदाता दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित है सम्पूर्ण उत्तरदाता कक्षा 11वीं एवं 12वीं शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत है।

प्रस्तुत सारणी के विवरणानुार समस्त 1000 ग्रामीण युवाओं कें आत्मनिर्भरता में परामर्श की भूमिका के संबंध में 89.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां में अपनी जानकारी प्रदान की वही 10.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नही में अपनी जानकारी प्रदान की ये 10.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आत्मनिर्भर परामर्श की जानकारी नही है। चूंकि ये सभी उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्रों से है, इसी तरह ग्रामीण युवाओं के आत्मनिर्भरता में परामर्श की भूमिका की आवश्यकता होती है के संबंध में 67.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी राय हां में व्यक्त किये हैं वही 32.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी मत नही में व्यक्त किया है। क्योकि ये ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भरता के विकास के लिए परामर्श की भूमिका की आवश्यकता होती है।

भविष्य उज्जवल होगा इनकी जानकारियां नही होती है, इन्हे चाहिए सही निर्देशन व परामर्श जिनके जरीये उन्हें ज्ञान हो जाए। वहीं 65.5 प्रतिशत उत्तरदाताअें ने अपनी राय हां में दिये है उन्हे लगता है कि ग्रामीण युवाओं को सृजनात्मकता के विकास के लिए नयी वस्तु या सामाग्री निर्माण के लिए सहायता व परामर्श की आवश्यकता होती है। वही 34.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना की सृजनात्मकता के विकास के लिए नयी वस्तु या सामाग्री निर्माण के लिए परामर्श की आवश्यकता नही होती है ऐसा इसलिए माना चूंकि ये ग्रामीण युवाएं सृजनात्मकता से परिचित नही है। इन्हे सही व उचित मार्गदर्शन का अभाव है। वही 66.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां में अपनी जानकारी प्रदान की वही 33.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी जानकारी नही में प्रदान की ओर वहीं ग्रामीण युवाओं को यह जानकारी नही है।

परिकल्पना H_3

परिकल्पना निर्देशन एवं परामर्श में ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं का सृजनात्मका का विकास होता है, इस संदर्भ में कुल 1000 उत्तरदाताओं का चयन देवनिर्देशन के आधार पर किया गया ये सम्पूर्ण उत्तरदाता दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हैं। सम्पूर्ण उत्तरदाता कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत हैं।

वही 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी जानकारी नही में व्यक्ति किये वही 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी जानकारी हां व्यक्त की इस ग्रामीण युवाओं को लगता है कि मुल्यों के विकास में उचित परामर्श की आवश्यकता होती है। वहीं 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी राय नही में दिये। 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना की ग्रामीण युवाओं की बौध्दिक विकास के लिए निर्देशन व परामर्श से संबंधित कार्यशालाएं होनी चाहिए जिससे ग्रामीण युवाओं का बौद्धिक विकास हो सकें। वही 21 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी राय ने अपनी जानकारी नही में व्यक्त किये, चूंकि इन्हें उचित निर्देशन व परामर्श का ज्ञान न होने के कारण हुआ है।

प्रस्तुत सारणी के विवरणनुसार 70.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जहां बौध्दिक विकास से परिचित है, वही 29.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नही में दिये। उन्हे बौद्धिक विकास की जानकारी ही नही है चूंकि से युवाएं ग्रामीण क्षेत्रों से निवासरथ है। वही 63 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि ग्रामीण युवाओं को निर्देशन व परामर्श से उनका बौध्दिक विकास किया जा सकता है, वही 37 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नही में अपनी जानकारी प्रदान किये, चूंकि ये युवाएं ग्रामीण क्षेत्रों से है। इन्हे निर्देशन व परामर्श का अभाव होने के कारण इनकी राय नही में मिला वहीं 77 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी जानकारी हां में दिये।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतू दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों का चयन किया गया है। इसके अंतर्गत वे 5 तहसील जो कि ग्रामीण पृष्ठभूमि एवं ग्रामीण क्षेत्रों में आते है। उनका चुनाव इस प्रकार किया गया। जो कि –

1. पाटन तहसील
2. जामूल तहसील
3. दुर्ग तहसील
4. धमधा तहसील
5. चरौदा भिलाई

अतः प्रत्येक तहसील के अंतर्गत आने वाले 10 शासकीय हायर सेकेण्डरी विद्यालय से 10 विद्यार्थियों का चयन दैव निर्देशन के आधार पर किया गया है। इस प्रकार कुल 1000 विद्यार्थियों का चयन देव निर्देशन के आधार पर किया गया है।

सुझाव

1. व्यवसाय चयन में सहायता करना ग्रामीण छात्र–छात्राओं को विभिन्न तकनीकी व्यवसायिक कौशलों के ज्ञान के लिए प्रेरित कर उन्हें व्यवसाय वयन कराने में सहायता प्रदान करना ।
2. ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में अकसर देखा गया है कि किशोरों को सहीं दिशा निर्देशन न मिलने के कारण वे पथ भ्रष्ट हो जाते है, अतः उन्हें विद्यालय में शैक्षिक कार्यक्रम का आयोजन करवाकर सही दिशा निर्देश कर सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
3. ग्रामीण युवाओं को समाज के प्रति जागरूक करना ही मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही उसकी उन्नति अवनति संभव है अतः प्रामीएा क्षेत्र सामाजिक संगठन को प्रोत्साहन देना चाहिए ताकि आज वर्तमान में युवाओं को समाज के मूल्य आदर्श व सामाजिक नियमों का पालन करने में सहायता प्राप्त कर सकता है।
4. शाला त्यागी युवाओं को निर्देशन–ग्रामीण क्षेत्रों वे विद्यार्थी जो अपनी शिक्षा बीच में छोड़ देते है उन्हें उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर पुनः शिक्षा से जोड़ा जाए।
5. ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर पुनः शिक्षा से जोड़ा जाए।
6. ग्राामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था की जाए।
7. ग्राामीण क्षेत्रों में उच्च प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जाए।
8. उचित निर्देशन एवं परामर्श हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में समय–समय पर विभिन्न पर विभिन्न सेमीनार विचार विमर्श।

अतः एवं शिक्षा के बिना मानव जीवन का विकास अधूरा है।वर्तमान में विशेषकर युवाओं में शिक्षा का विशेष महत्व युवा दश का आधार स्तंभ है, अगर आधार स्तंभ का विकास उचित रूप से होता है, तो

भवन का निर्माण मजबूत होता है, युवाओं के उचित विकास में वर्तमान समय में निर्देशन एवं परामर्श का विशेष महत्व हैं। वर्तमान युवा शिक्षित तो हो रहा है, परन्तु वह दिग्भ्रमित है, उसे सही मार्ग प्रदान करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। उचित दिशा निर्देश उसे प्रदान किया जाए विशेषकर छत्तीसगढ़ राज्य के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

निष्कर्ष

1. निर्देशन एवं परामर्श से ग्रामीण युवाओं के व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में जहाँ 86.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना की उन्हें सामान्य शिक्षा के साथ अन्य उपयोगी शिक्षाओं के लिए निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है। अतः निर्देशन एवं परामर्श उनके लिए अत्यन्त आवश्यक है।
2. 80 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाताओं ने जहाँ व्यक्तित्व विकास के लिए निर्देशन एवं परामर्श को सही माना एवं इसे अनिवार्य के संबंध में अपनी–अपनी राय व्यक्त की।
3. आत्मनिर्भता के संदर्भ में 90 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाताओं ने निर्देशन एवं परामर्श की अनिवार्यता को स्वीकार किया।

संदर्भ

1. अवनीन्द्र शील। साहित्य रचनालय 37/50 गिलिस बाजार कानपुर। 2007, 12-19.
2. रमेश गोयल। श्रजत प्रकाशन 4740/23 अंसारी रोड़, दरियागंज नई दिल्ली। 2014, 93-33.
3. डॉ. सायवीर सिंह। रजत प्रकाशन 4740/23 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली। 2014, 163-183.
4. मुनेश कुमार। सोमनाथ दल, संजय प्रकाशन 4378/4 बी. 209 जे .एम.डी.हाऊस अंसारी रोड़ दरियांगज नर्द दिल्ली। 2009, 06-27.
5. मदन मोहन श्रीवास्तव। वंदना पब्लिकेषन्स द्वितीय तल, जे,एम. डी. हाऊस अंसारी रोड़ आगरा, 2013.
6. डॉ. सुरेश भटनागर, डॉ रामपाल विनोद। पुस्कर मंदिर –कार्यालय डॉ. रागेय राघव मार्ग आगरा। 2006, 34-83
7. डॉ. सीता राम जायसवाल। विनोद पुस्कर मंदिर –कार्यालय डॉ. रागेय राघव मार्ग आगरा। 2008, 100-119